Class: B.A. 1st year | **Course Code:** MUSA102PR

Subject: Music (Vocal/Instrumental) | **Course Name:** Stage Performance

MUSIC
(Stage Performance)

Lesson : 1 - 11

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)	19
6	इकाई - 3	अल्हैया बिलावल राग का द्रुत ख्याल/ लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	31
7	इकाई - 4	काफी राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	43
8	इकाई - 5	भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)	54
9	इकाई - 6	अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	65
10	इकाई - 7	काफी राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	76
11	इकाई - 8	भैरव राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में)	87
12	इकाई - 9	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार (वादन के संदर्भ में)	98
13	इकाई - 10	मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक (सितार वादन के संदर्भ में)	115
14	इकाई - 11	ताल • तीन ताल • दादरा ताल	126
15		महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार	140

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA102PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में गायन के संदर्भ में अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के सरगम गीत आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में गायन के संदर्भ में अल्हैया बिलावल राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में गायन के संदर्भ में काफी राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में भैरव राग का परिचय, आलाप, द्रुत ख्याल/लक्षणगीत, तानों का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में वादन के संदर्भ में अल्हैया बिलावल राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन के संदर्भ में काफी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन के संदर्भ में भैरव राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़े आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में वादन के संदर्भ में सितार के मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में ताल पक्ष से तीनताल तथा दादरा का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।
प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

COURSE CODE MUSA102PR

Hindustani Music

Paper-I Practical (Unit-II)

Title - Stage-Performance

Max Marks 50 (35+15 Assesment) **Credit 3**

Raga

- AlhaiyaBilaval
- Kafi
- Bhairav

Vocal Music

- Five Alankars in all the Rãgas
- Sargam Geet in any two Rãgas
- Lakshangeet or Drut Khyãl in all Rãgas.

Instrumental Music

- Five Alankars in all the Rãgas.
- Razakhani (Drut gat) in all the Rãgas
- Basic technique of Mizrab's Bol.

Vocal & Instrumental

- Ability to recite the following Thekas with Tãli & Khãli Teentãla, Dadra
- Vocal - Playing of Tanpura is compulsory
- Basic knowledge of Playing Alankars on Harmonium

इकाई-1
अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों का परिचय तथा अलंकार
1.3.1	अल्हैया बिलावल राग का परिचय
1.3.2	अल्हैया बिलावल राग के अलंकार
1.3.3	काफी राग का परिचय
1.3.4	काफी के अलंकार
1.3.5	काफी राग का परिचय
1.3.6	काफी राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में गायन संदर्भ में, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों का संक्षिप्त परिचय तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरो या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप के साथ-साथ उनमें गाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों का परिचय तथा अलंकार

1.3.1 अल्हैया बिलावल राग का परिचय

राग- अल्हैया बिलावल

थाट- अल्हैया बिलावल

जाति- षाड़व-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- गांधार

स्वर - अवरोह में कोमल निषाद (नि), अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में म

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - बिलावल

आरोह- सा ग रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग प ध नि ध प, म ग म रे सा

1.3.2 अल्हैया बिलावल राग के अलंकार

1 आरोह- सा रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

2 आरोह- सा सा, रे रे, ग ग, प प, ध ध, नि नि, सां सां

अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

3 आरोह- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

4 आरोह- सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

अवरोह- सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग, रे ग रे, सा रे सा

5 आरोह- सा रे ग, रे ग प, प ध नि, ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

6 आरोह- सा रे ग प, रे ग प ध, ग प ध नि, प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

7 आरोह- सा रे ग प ध, रे ग प ध नि, ग प ध नि सां, प ध नि सां रें, ध नि सां रें गं

अवरोह- गं रें सां नि ध, रें सां नि ध प, सां नि ध प ग, नि ध प ग रे, ध प ग रे सा

8 आरोह- सा ग रे, रे ग प, ग प ध, ध प नि, प नि सां, नि सां रें

अवरोह- नि रें सां, ध सां नि, प नि ध, म ध प, ग प म, रे म ग, सा ग रे

9 आरोह- सा रे ग सा, रे ग प रे, ग प ग ध, प ध प नि, प ध नि प,

ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह- सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प, म प ध म,

ग म प ग, रे ग म रे, सा रे ग सा

10 आरोह- सा ग रे सा, रे म ग रे, ग प म ग, म ध प म, प नि ध प,

ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

अवरोह- सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म ध प म,

ग प म ग, रे म ग रे, सा ग रे सा

11 आरोह- सा ग म रे सा, रे प म ग रे, ग प ध म ग, प ध नि प म,

प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

अवरोह- सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध, प नि सां ध प,

म ध नि प म, ग प ध म ग, रे म प ग रे, सा ग म रे सा

12 आरोह- सा ग, रे प, ग ध, प नि, ध सां

अवरोह- सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा

13 आरोह- सा म, रे प, ग ध, प नि, ध सां

अवरोह- सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा

14 आरोह- सा प, रे ध, ग नि, प सां

अवरोह- सां प, नि ग, ध रे, प सा

15 आरोह- सा रे सा रे ग, रे ग रे ग प, ग प ग प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

अवरोह- सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म, प म प म ग,

म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

16 आरोह- सा रे ग सा रे ग प, रे ग प रे ग प ध, ग प ध ग प ध नि, प ध नि प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म, ध प म ध प म ग,

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17 आरोह- सा रे, रे ग, ग प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18 आरोह- सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग प ग रे, ग प ग ग प प म ग,

प ध प प ध नी ध प, ध नी ध ध नि सां नी ध, नि सां नी नी सां रें सां नि,

सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नी नि सां रें सां नी, ध नी ध ध नि सां नी ध,

प ध प प ध नी ध प म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग,

रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19 आरोह- सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे प ग प ग प ग ध,

प ध प ध प नि, ध नी ध नी ध सां

अवरोह- सां नी सां नि सां ध, नी ध नी ध नी प, ध प ध प ध म,

प म प म प ग, म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20 आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग प, ग प ध प, प ध ध नी ध नी नि सां

अवरोह- सां नी नी ध, नी ध ध प, ध प प म, प म म ग, म ग ग रे, ग रे रे सा

1.3.3 काफी राग का परिचय

राग- काफी

थाट- काफी

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- पंचम

संवादी- रिषभ

स्वर - गंधार, निषाद कोमल (ग नि), अन्य स्वर शुद्ध

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - सा सा, रे - रे रे, ग ग म म प

1.3.4 काफी राग के अलंकार

1 आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

2 आरोह- सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सां सां

अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

3 आरोह- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

4 आरोह- सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

अवरोह- सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग, रे ग रे, सा रे सा

5 आरोह- सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

6 आरोह- सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

7 आरोह- सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे, प म ग रे सा

8 आरोह- सा ग रे, रे म ग, ग प म, म ध प, प नि ध, ध सां नि, नि रें सां

अवरोह- नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, म ध प, ग प म, रे म ग, सा ग रे

9 आरोह- सा रे ग सा, रे ग म रे, ग म प ग, म प ध म, प ध नि प,

ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह- सां रें ग सां, नि सां रें नी ध नी सां ध, प ध नी प,

म प ध म, ग म प ग रे ग म रे, सा रे ग सा

10 आरोह- सा ग रे सा, रे म ग रे, ग प म ग, म ध प म, प नी ध प,

ध सां नी ध, नी रें सां नी, सां गं रें सां

अवरोह- सां गं रें सां, नी रें सां नी, ध सां नी ध, प नी ध प, म ध प म,

ग प म ग रे म ग रे, सा ग रे सा

11 आरोह- सा ग म रे सा, रे म प ग रे, ग प ध म ग, म ध नी प म, प नी सां ध प,

ध सां रें नी ध, नी रें गं सां नी, सां गं मं रें सां

अवरोह- सां गं मं रें सां, नी रें गं सां नी ध सां रें नी ध, प नी सां ध प, म ध नी प म,

ग प ध म ग, रे म प ग रे, सा ग म रे सा

12 आरोह- सा ग, रे म, ग प, म ध, प नी ध सां

अवरोह- सां ध, नी प, ध म, प ग, म रे, ग सा

13 आरोह- सा म, रे प, ग ध, म नी, प सां

अवरोह- सां प, नी म, ध ग प रे, म सा

14 आरोह- सा प, रे ध, ग नी, प सां

अवरोह- सां प, नी.ग, ध रे, प सा

15 आरोह- सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध, प ध प ध नी ध नी ध नी सां

अवरोह- सां नी सां नी ध, नी ध नी ध प, ध प ध प म, प म प म ग, म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

16 आरोह- सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म प ध,

म प ध म प ध नि, प ध नी प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध सां नी ध प, नी ध प नी ध प म, ध प म ध प म ग,

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17 आरोह- सा रे, रे ग, ग म, म प, प ध, ध नी, नी सां

अवरोह- सां नी, नी ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18 आरोह- सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म ग रे, ग म ग ग म प म ग

म प म म प ध प म, प ध प प ध नी ध प, ध नी ध ध नी सां नी ध,

नी सां नी नी सां रें सां नी सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नी सां नी नी सां रें सां नी ध नी ध ध नी सां नी ध,

प ध प प ध नी ध प, म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग,

रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19 आरोह- सा रे सा रे सा ग रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

प ध प ध प नी ध नी ध नी ध सां

अवरोह- सां नी सां नी सां ध, नी ध नी ध नी प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20 आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध,

प ध ध नी ध नी नी सां

अवरोह- सां नी नी ध, नी ध ध प, ध प प म, प म म ग

म ग ग रे, ग रे रे सा

1.3.5 भैरव राग का परिचय

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - रिषभ, धैवत कोमल (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सा नि ध, प म ग म रे सा

पकड़ - नि़ सा ग म धध प, म ग मरे सा

1.3.6 भैरव राग के अलंकार

1. आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

   अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

2. आरोह- सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सां सां

   अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे सा सा

3. आरोह- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे सा सा सा

4. आरोह- सा रे सा, रे ग रे ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रे सां

अवरोह- सां रे सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग, रे ग रे सा रे सा

5. आरोह- सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे ग रे सा

6. आरोह- सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नि, प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

7. आरोह- सा रे ग म प, रे ग म प ध, ग म प ध नि, म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म, नि ध प म ग, ध प म ग रे प म ग रे सा

8. आरोह- सा ग रे रे म ग, ग प म, म ध प, प नि ध सां नि, नि रे सां

अवरोह- नि रे सां, ध सां नि, प नि ध, म ध प, ग प म, रे म ग, सा ग रे

9. आरोह- सा रे ग सा, रे ग म रे ग म प ग, म प ध म, प ध नि प,
ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह- सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प,
म प ध म, ग म प ग, रे ग म रे, सा रे ग सा

10. आरोह- सा ग रे सा, रे म ग रे, ग प म ग, म ध प म, प नि ध प,
ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

अवरोह- सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म ध प म,

गपमग, रेमगरे, सागरेसा

11. आरोह- सागमरेसा, रेमपगरे, गपधमग, मधनिपम,

पनिसांधप, धसांरेंनिध, निरेंगंसांनि, सांगंमंरेंसां

अवरोह- सांगंमंरेंसां, निरेंगंसांनि, धसांरेंनिध, पनिसांधप,

मधनिपम, गपधमग, रेमपगरे, सागमरेसा

12. आरोह- साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां

अवरोह- सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा

13. आरोह- साम, रेप, गध, मनि, पसां

अवरोह- सांप, निम, धग, परे, मसा

14. आरोह- साप, रेध, गनि, पसां

अवरोह- सांप, निग, धरे, पसा

15. आरोह- सारे सारेग, रेग रेगम, गम गमप, मप मपध,

पध पधनि , धनि धनिसां

अवरोह- सांनि सांनिध, निध निधप, धप धपम, पम पमग,

मग मगरे, गरे गरेसा

16. आरोह- सारेग सारेगम, रेगम रेगमप, गमप गमपध,

मपध मपधनि, पधनि पधनिसां

अवरोह- सांनिध सांनिधप, निधप निधपम, धपम धपमग,

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17. आरोह- सा रे, रे ग, ग म, म प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18. आरोह- सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म ग रे, ग म ग ग म प म ग,

म प म म प ध प म, प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध,

नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध,

प ध प प ध नि ध प, म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग,

रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19. आरोह- सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

अवरोह- सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20. आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध,

प ध ध नि, ध नि नि सां

अवरोह- सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म, प म म ग,

म ग ग रे, ग रे रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

1.2 गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

1.3 निम्न में से कौन सा अलंकार अल्हैया बिलावल राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

1.4 निम्न में से कौन सा अलंकार अल्हैया बिलावल राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

1.5 निम्न में से कौन सा अलंकार काफी राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

1.6 निम्न में से कौन सा अलंकार काफी राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

1.7 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

1.8 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

1.4 सारांश

अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इन रागों को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में बजाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, रागों के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

1.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
-

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: ख)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: घ)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: घ)

1.7 उत्तर: ख)

1.8 उत्तर: ख)

1.7 संदर्भ

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग काफी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 5. राग काफी के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 6. राग भैरव के पांच अलंकार लिखिए।

इकाई-2
अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के सरगम गीत
2.3.1	अल्हैया बिलावल राग का सरगम गीत
2.3.2	काफी राग का सरगम गीत
2.3.3	भैरव राग का सरगम गीत
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संदर्भ में, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीतों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों में सरगम गीत को गाने से राग के स्वरुप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के क्रियात्मक स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के क्रियात्मक स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों को गाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, गायन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, गायन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के सरगम गीतों से, संगीत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के सरगम गीत (गायन के संदर्भ में)

2.3.1 राग अल्हैया बिलावल का सरगम गीत

राग: अल्हैया बिलावल **ताल: झपताल** **लय: मध्य**

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
स्थायी									
ग	प	नी	ध	नी	सां	-	सां	रें	सां
सां	सां	रें	सां	नी	ध	प	ध	म	ग
ग	म	प	म	ग	म	रे	सा	रे	सा
ध	ध	रें	सां	नी	ध	प	ध	म	ग

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
अंतरा									
प	प	नी	ध	नी	सां	-	सां	रें	सां
सां	रें	गं	मं	पं	मं	गं	मं	रें	सां
गं	रें	सां	रें	सां	ध	प	सां	ध	प
ग	म	रे	ग	म	प	ग	ग	रे	सा

अल्हैया बिलावल राग की तानें

- गप धनि सांनि धप धनि धप मग रेसा
- सारे गप मग मरे गप मग मरे सा-
- सारे गप धनि धप मग मरे सारे सा-
- सारे गरे गप मग मरे गप धनि सां-
- सारे गप धप मग रे- गप धनि धप म- गम गप धनि सांनि धप धनि सारें गरें सा-
- सांनि सांनि धनि धनि धप धप मग मग रेग रेग गरे सांनि सांनि धनि धप

2.3.2 राग काफी का सरगम गीत

राग: काफी **ताल: झपताल** **लय: मध्य**

x		2			0		3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
स्थायी									
ग	ग	रे	सा	रे	प	-	म	प	ध
ग	ग	रे	सा	रे	प	-	म	प	प
म	ध	नी	सां	नी	ध	म	प	ग	रे
रे	ग	रे	म	ग	रे	सा	रे	नी	सा
नी	ध	सां	नी	ध	म	प	ध	ग	रे
अंतरा									
म	म	प	नी	नी	सां	-	प	नी	सां
रें	गं	रें	सां	रें	नी	सां	नी	ध	ध
प	रें	सां	सां	रें	नी	सां	नी	ध	ध
सां	-	नी	ध	म	प	ध	ग	ग	रे
रे	ग	रे	म	ग	रे	सा	रे	नी	सा
नी	ध	सां	नी	ध	म	प	ध	ग	रे

काफी राग की तानें

- ऩिऩि ध़प़ गग रेसा ऩिऩि धप गंगं रेंसां

  निध पध निसां रेंगं रेंसां निसां निध पम गम

  पम गरे सा- निसा सारे रेग गम

- ऩिऩि ध़प गग रेसा निनि धप गंगं रेसां निध पध निसां

  रेंगं रेंसां निसां निध पम गम पम गरे सा- ऩिसा सारे रेग गम

- सांनि धप मग रेसा सारे गम पध निसां

- सांनि निध धप पम मग गरे रेसा सारे

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध

- पध निनि धनि सांसां सांनि धप मग रेसा

2.3.3 राग भैरव का सरगम गीत

राग: भैरव **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
रे	ग	रे	ग	म	प	ग	म	नी	ध	-	ग	-	म	ग	रे
ग	म	प	ग	म	नी	ध	-	रे	-	सां	गं	-	गं	-	मं
नी	ध	रें	-	ध	-	रे	-	ग	म	प	ग	म	ग	रे	ऩी
अंतरा															
ग	ग	प	प	ध	ध	नी	नी	ध	नी	नी	ध	म	प	ग	म
ध	-	नी	ध	-	रें	-	सां	गं	-	रें	-	पं	-	गं	मं
ध	-	ध	-	नी	ध	-	नी	रें	गं	नी	रें	ध	नी	म	ध
ग	म	प	ग	म	ग	रे	ऩी	ध	प	म	ग	रे	-	रे	सा

भैरव राग की तानें

- सारे॒ गग रे॒ग मम

  गम पप मप धध

  पध॒ निनि ध॒नि सांसां

  नि॒ध पम गम रे॒सा

- ऩिसा गम धध पम

  गम पम गरे॒ ऩिसा

  पम गम धध पम

  पम गम रे॒सा ऩिसा

- निसां गंमं गरें॒ सांनि

  ध॒नि सारें॒ सांनि ध॒प

  मप ध॒नि धप मप

  गम रे॒रे॒ सासा ऩिसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।

क) सही

ख) गलत

2.2 स्वरमालिका किसे कहते हैं?

क) राग में प्रयुक्त होने वाली ताल रचना

ख) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ताल रहित रचना

ग) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना

घ) राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की काव्य रचना

2.3 भैरव राग में रे ध होते हैं।

क) हां

ख) नहीं

2.4 काफी राग में रे ध स्वर होते हैं।

क) हां

ख) नहीं

2.5 काफी राग में गांधार स्वर कोमल होता है।

क) हां

ख) नहीं

2.6 भैरव राग के सरगम गीत में मध्यम का प्रयोग नहीं होता है।

क) सही

ख) गलत

2.7 अल्हैया बिलावल राग के सरगम गीत में पंचम स्वर वर्जित होता है।

क) सही

ख) गलत

2.8 काफी राग के सरगम गीत में गाधार तथा निषाद कोमल होते हैं।

क) सही

ख) गलत

2.4 सारांश

किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है। इसे स्वरमालिका भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा राग के स्वरुप को जानने में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज

तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा रागों के चलन को जानने के लिए सरगम गीतों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है।

2.5 शब्दावली

- सरगम गीत: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहा जाता है।
- स्वरमालिका: किसी राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों की (स्वरों की माला) तालबद्ध रचना को स्वरमालिका कहा जाता है।
- शास्त्रीय संगीत: शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जो नियमों से बंधा होता है।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: क)

2.4 उत्तर: ख)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: ख)

2.7 उत्तर: ख)

2.8 उत्तर: क)

2.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 2. राग काफी का सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव का सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 5. राग काफी के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 6. राग भैरव के सरगम गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 7. सरगम गीत क्या होते हैं?

इकाई-3
अल्हैया बिलावल राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	राग अल्हैया बिलावल
3.3.1	अल्हैया बिलावल राग का परिचय
3.3.2	अल्हैया बिलावल राग का आलाप
3.3.3	अल्हैया बिलावल राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
3.3.4	अल्हैया बिलावल राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग अल्हैया बिलावल का परिचय,आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अल्हैया बिलावल के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग अल्हैया बिलावल का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अल्हैया बिलावल राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग अल्हैया बिलावल के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 राग अल्हैया बिलावल

3.3.1 अल्हैया बिलावल राग का परिचय

राग- अल्हैया बिलावल

थाट- अल्हैया बिलावल

जाति- षाड़व-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- गांधार

स्वर - अवरोह में कोमल निषाद (नि), अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में म

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - बिलावल

आरोह- सा ग रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग प ध नि ध प, म ग म रे सा

3.3.2 अल्हैया बिलावल राग का आलाप

- ग रे ग प, प ऽ म ग रे, सा रे ग प

  ऽ म ग म रे सा।

- सा नि़ ध़ प़ नि़ ध़ ऽ सा, ग रे सा प ऽ

  म ग म रे सा

- सा ग रे ग प, ध ग म रे, ग रे ग प, ग प

  ध नि ध प, ग रे ग प ध नि ध प

  म ग म रे सा।

- सा ऽ ग, रे ग प ध नि ध प म ग म रे, ग प ऽ

  ध नि ध प ,म ग, म रे, सा रे ग रे ग प म ग ग

  रे ग प, ध ग रे ग प म ग म रे, सा।

- ग प ध नि, ध नि सां ऽ ऽ ऽ सां गं रें सां, गं रें

  गं पं ऽ मं गं मं रें ऽ सां, गं मं रें सां ऽ ध नि ध

  प म ग प ध ग प ध नि सां ध नि ध प म ग

  म रे, ग प ध प म ग म रे, ग प ध नि ध प,

  म ग म रे सा।

3.3.3 अल्हैया बिलावल राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत

राग: अल्हैया बिलावल **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
						नीसां	सां	नीध	प	पगम	रेग	प	प	नी	धनी
						अ	ति	अ	रु	ण-	ब	र	न	पि	या
सां	-	सां	सां	नी	धनी	धप	प	नीधनी	सारें	सां	सां	ध	प	मग	मरे
नै	-	न	तु	म्हा	रे	अ	ब	मा-	--	न	हुं	र	ति	र-	स-
ग	मग	प	मग	म	रे	सा	-	नीसा	सामं	ग	म	-	प	नी	धनी
भ	ये-	-	र-	ग	म	गे	-	क	र	त	के	-	लि	पि	या
सां	सां	रेसां	सां	नी	धनी	सां	सां								
प	ल	क	बि	सा	रे	अ	ति								
x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा															
								मप	-	नी	धनी	सां	सां	सां	-
								मं	-	द	मं	-	द	डो	-
नीसां	गरें	मंगं	मं	गं	रें	सां	-	मंगं	मं	पं	मंगं	मं	रें	सां	सां
ल	त-	सं	-	क	र	सों	-	सो	-	भि	त-	म	-	ध्य	म
धनी	धरें	ध	ध	नी	धनी	सां	सां								
नो-	--	ह	र	ता	रे	अ	ति								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
संचारी															
								ऩीसा	-	नीध	नीध	-	नीध	नीध	नीध
								बा	-	र	बा	-	र	अ	व
नीध	नी	प	प	प	-	नीध	नी	नीसां	रें	सां	सांध	नी	प	मग	मरे
लो	-	कि	प	र	म	रु	चि	क	प	ट	ने	-	ह	म	न
मग	म	प	मग	रे	-	सा	-								
ह	र	त	ह	मा	-	रे	-								
x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
आभोग															
								मप	-	नीध	नी	सां	सां	सां	सां
								सू	-	र	श्या	.	म	दे	खे
नीसां	गरें	मंगं	मं	गं	रें	सां	सां	मंगं	मं	पं	मंगं	मं	रें	सां	सां
सु	ख	पा	-	व	त	दु	ख	मो	-	च	न	लो	-	च	न
नीधनी	सारें	सां	सां	नी	घनी	सां	सां								
हसे	-	र	त	ना	रे	अ	ति								

3.3.4 अल्हैया बिलावल राग की तानें

सम से 8वीं मात्रा तक –

- सारे गप मग मरे गप मग मरे सा-
- सारे गप धनि धप मग मरे सारे सा-
- गप धनि सांनि धप धनि धप मग रेसा
- सारे गरे गप मग मरे गप धनि सां-

सम से सम तक –

- सारे गप धप मग रे- गप धनि धप म- गम गप धनि
  सांनि धप धनि सारें गरें सा-
- सांनि सांनि धनि धनि धप धप मग मग रेग रेग गरे
  सांनि सांनि धनि धप

5वीं मात्रा से

- सारे सारे गरे गप गप धनि धप मग रेग पम गरे सा-
- गप धनि सारें गरें सांनि धनि सांनि धनि धप मग रेग पम

सम से सम तक –

- सारे गप धनि सारें सांनि धप मग मरे गप धनि सारें
  गरें सांनि धप मग रेसा

- सारे गरे गप गप धप धनि धनि धप धप गप धनि सारें गरें सांनि धप
- सारे गप मरे मरे गप धनि धप मग मरे गप धनि सारें सांनि धप मग रेसा
- सारें सांनि सानि धप धनि सारे गम रेसा गप मग रेग पध गप धनि पध निसां
- गरे गप धनि सांनि धनि धप धनि सां- गरे सांनि धनि सारें सांनि धनि सांनि धप
- गरे गप धनि सांनि धनि धनि धप धप धनि धप मग मरे गरे गप ध़नि़ सा-

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 अल्हैया बिलावल राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

3.2 अल्हैया बिलावल राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

3.3 अल्हैया बिलावल राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

3.4 अल्हैया बिलावल राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

3.5 अल्हैया बिलावल राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

3.6 अल्हैया बिलावल राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

3.7 अल्हैया बिलावल राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध <u>नि</u> ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध <u>नि</u> ध प म प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

3.8 अल्हैया बिलावल राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

3.9 अल्हैया बिलावल राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

3.10 अल्हैया बिलावल राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

3.4 सारांश

अल्हैया बिलावल राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। अल्हैया बिलावल राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

3.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: ग)

3.2 उत्तर: घ)

3.3 उत्तर: क)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: ग)

3.6 उत्तर: ग)

3.7 उत्तर: क)

3.8 उत्तर: ग)

3.9 उत्तर: ख)

3.10 उत्तर: ख)

3.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग अल्हैया बिलावल का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग अल्हैया बिलावल के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-4
काफी राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	राग काफी
4.3.1	काफी राग का परिचय
4.3.2	काफी राग का आलाप
4.3.3	काफी राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
4.3.4	काफी राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग काफी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग काफी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग काफी का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- काफी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- काफी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- काफी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- काफी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- काफी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग काफी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग काफी

4.3.1 काफी राग का परिचय

राग- काफी

थाट- काफी

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- पंचम

संवादी- रिषभ

स्वर - गंधार, निषाद कोमल (ग नि), अन्य स्वर शुद्ध

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - सा सा, रे - रे रे, ग ग म म प

यह काफी थाट का आश्रम राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। पंचम स्वर वादी तथा रिषभ स्वर संवादी है। काफी राग में गंधार तथा निषाद स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं। शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। काफी राग में पंचम स्वर को महत्वपूर्ण स्वर कहा जाता है। सभी स्वर संगतियाँ पंचम की ओर बढ़ती हुई लगती हैं, जैसे - सा रे,

ग रे, रे ग म - म प, रे ग म प म $\overline{\text{निध}}$प। इस राग में पंचम तथा गंधार की संगति का अधिक प्रयोग होता है, जैसे - म प $^{\text{म}}$ग रे, म प ध म प $^{\text{म}}$ग रे। काफी राग में जितनी बार पंचम पर जाते हैं उतनी बार कोमल निषाद से धैवत का स्पर्श करते हुए मींड से पंचम पर आते हैं। पंचम पर यह क्रिया काफी राग की सबसे बड़ी पहचान है, जैसे ग रे ग म ऽ म ऽ $\overline{\text{निध}}$प आदि। काफी का आरोह तीन भागों में बाँटा जा सकता है 1. स रे $^{\text{म}}$ग रे, 2. रे ग म प 3. म प नि सां या म प ध नि सां। इसी प्रकार अवरोह भी तीन भागों में है 1 सां नि ध प, 2 ध म प $^{\text{म}}$ग रे 3 रे नी सा। काफी राग का विकास मुख्य रूप से होली के अवसर पर गाई जाने वाली लोकधुन से हुआ है। ठुमरी आदि के लिए इस राग को मुख्य राग माना जाता है।

4.3.2 काफी राग का आलाप

- सा रे सा, रे ग, रे ग म ग, रे ग रे रे म प - म प ग रे,
  म प ध म प म प ग रे, सा रे रे ग ग रे सा,
  म प, ग म प ग रे नि सा।
- नि नि सा ग रे सा, रे रे ग ग रे सा, म प ध म प ग,
  रे, ग म ग रे, प ग रे, म ग, रे म ग रे सा।
- नि सा रे ग म प, ग म ग रे, नि सा नि ध नि सा
  नि ध़ प़ म़ ध़ नि सा, ग रे नि सा, म प, ग म प ध
  नि ध प ,ग रे सा, सा रे ग म प ध ध प ध ध प,
  म प ध प, ग म प ध नि सां नि ध प,
  म प म ग म ग रे सा।

- सा सा रे रे प, म प ग म प, नि ध प, सां नि ध नि ध प,
  म प ध नि ध प, म ध नि सां, नि ध प सां नि ध नि ध प
  म ग रे ग म प, ध प म प, रे ग म प, ध नि सां गं रें
  सां रें सां नि ध प ध प ग म ग रे ग म प, म ग रे सा।

4.3.3 काफी राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत

राग: काफी **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई

आज खेलो शाम संग होरी

पिचकारी रंग भरी केसर की

अंतरा

कुँवर कन्हैया संग सखी राधा

रंग भरी जोरी सोहत री

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
						रे	म	रेम	पध	प	ग	-	रे	म	म
						आ	ज	खेऽ	ऽऽ	लो	शा	ऽ	म	सं	ग
प	-	प	-	-	-	ध	ध	ध	-	नि	-	प	ध	म	म
हो	s	री	s	s	s	पि	च	का	s	री	s	रं	ग	भ	री
पध	निसा	नि	ध	प	s										
केऽ	ऽऽ	स	र	की	s										

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा:															
								ध	म	प	ध	सां	-	सां	सां
								कुं	व	र	क	न्है	s	या	s
रें	गं	रें	सां	नि	ध	सां	-								
सं	ग	स	खी	रा	s	धा	s								
								सां	सां	सां	रें	नि	-	ध	म
								रं	ग	भ	री	जो	s	री	s
पध	निसां	नि	ध	प	s	रे	म								
सोऽ	ऽऽ	ह	त	री	s	आ	ज								

4.3.4 काफी राग की तानें

सम से सम तक

- निनि सारे ग- गम प- -- निनि सारे ग- गम प- --

  निनि सारे ग- गम

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां

  रेंसां निध पम गरे सासा रेरे ग- मम प- -- सासा रेरे

  ग- मम प- -- सासा रेरे ग- मम

- धनि सारें गरें सारें सारें गंमं गरें सांसां निसां निध मग गम

  पध मग रेसा सा- रे- ग- म- प- -- सा- रे-

ग- म- प- -- सा- रे- ग- म-

खाली से सम तक

- ऩिऩि धप़ गग रेसा ऩिऩि धप गंगं रेंसां

  निध पध निसां रेंगं रेंसां निसां निध पम गम

  पम गरे सा- निसा सारे रेग गम

खाली से सम तक

ऩिऩि धप़ गग रेसा निनि धप गंगं रेसां निध पध निसां

रेंगं रेंसां निसां निध पम गम पम गरे सा- ऩिसा सारे रेग गम

सम से 8वीं मात्रा तक

- सांनि धप मग रेसा सारे गम पध निसां
- सांनि निध धप पम मग गरे रेसा सारे
- सारे गग रेग मम गम पप मप धध
- पध निनि धनि सांसां सांनि धप मग रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 काफी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

4.2 काफी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

4.3 काफी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि कस दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 काफी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

4.5 काफी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) कोई भी नहीं

4.6 काफी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) काफी

घ) तोड़ी

4.7 काफी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

4.8 काफी राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.9 काफी राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

4.10 काफी राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

काफी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। काफी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: ग)

4.2 उत्तर: घ)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: क)

4.5 उत्तर: घ)

4.6 उत्तर: ग)

4.7 उत्तर: क)

4.8 उत्तर: ग)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग काफी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग काफी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग काफी के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग काफी के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-5
भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	राग भैरव
5.3.1	भैरव राग का परिचय
5.3.2	भैरव राग का आलाप
5.3.3	भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षणगीत
5.3.4	भैरव राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भैरव का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरव का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरव राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग भैरव

5.3.1 भैरव राग का परिचय

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - ऋषभ, धैवत (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ऩी सा ग म ध ध प, ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

5.3.2 भैरव राग का आलाप

- सा रे रे सा,सा ध, नि नि ध, नि ध प,

  प ध नि सा रे रे सा।

- नि सा ग म रे सा, ध नि नि रे सां,

  ध नि ध प, प म ग प, ग म प ग म रे रे सा।

- ग म प ध प, नि सा ग म रे नि

  सा ग म ध प,

  म प ध प, ग म रे रे सा।

- ग म प ध, ध ध सां ध नि ध प, ध नि सां रें सां,

  सां नि ध ध नि ध प, ध प म ग म ध प ग म रे,

  रे सां नि ध नि सां रे सां, सां नि ध प म ग रे सा

- ग म ध – नि- नि सां, सां रें, सां गं मं रें रें सां रें सां

  नि ध ध प, ध प म ग म ध प, ग म रें रें सां

  नि ध ध प ध प म ग म ध प ग म रे - रे – सा।

5.3.3 भैरव राग का द्रुत ख्याल/लक्षण गीत

राग: भैरव **ताल: तीनताल** **लय: मध्य**

स्थाई:

जागो मोहन प्यारे

सांवरी सूरत मोरे मन हीं भावे

सुंदर श्याम हमारे

अन्तरा:

ग्वाल-बाल सब भूपति आये

तुम्हरे दरश के कारज ठाढ़े

उठि-उठि नंद किशोर

0				3				x				2			
9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
स्थाई:															
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s
ग	म	ग	रे	ग	म	प	प	म	ग	म	ग	रे	रे	सा	-
सां	व	रि	सू	र	त	मो	रे	म	न	हीं	s	भा	s	वे	s
सा	रे	ग	म	प	-	ध	प	पध	निसां	नि	सां	ध	प	धप	म
सुं	s	द	र	श्या	s	म	ह	माs	ss	s	s	रे	s	ss	s
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s
अंतरा:															
म	-	म	म	प	प	ध	ध	प	ध	सां	नि	सां	सां	सां	सां
प्रा	s	त	स	म	य	उ	ठ	भा	s	नु	उ	द	य	भ	ये
ध	-	ध	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	रें	सां	ध	-	प	-
ग्वा	s	ल	बा	s	ल	स	ब	भू	s	प	ति	आ	s	ये	s
प	ध	प	म	ग	ग	गम	प	म	ग	म	ग	रे	-	सा	-
तु	म्ह	रे	द	र	श	केs	s	का	s	र	ज	ठा	s	ढे	-
सा	रे	ग	म	प	-	प	ध	पध	निसां	नि	सां	ध	प	धप	म
उ	ठि	उ	ठि	नं	s	द	कि	शोs	ss	s	s	र	s	ss	s
(म)ग	म	(नी)ध	-	प	-	ध	म	मप	धप	म	प	म	-	ग	-
जा	s	गो	s	मो	s	ह	न	प्या	ss	s	s	रे	s	s	s

5.3.4 भैरव राग की तानें

सम से सम तक:-

- सांनि धप मग रेसा ऩिसा गम रेसा ऩिसा सांनि सांनि धप

  म- निध निध पम गरे

- सांनि सांनि धप निध निध पम गरे ऩिसा सारे गग

  रेग मम गम पप गम रेसा

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां

  निध पम गम रेसा

सम से खाली तक:-

- ऩिसा गम धध पम गम पम गरे ऩिसा पम गम

  धध पम पम गम रेसा ऩिसा

सम से सम तक:-

- निसां गंमं गंरें सांनि धनि सारें सांनि धप मप धनि

  धप मप गम रेरे सासा ऩिसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 भैरव राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

5.2 भैरव राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

5.3 भैरव राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

5.4 भैरव राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

5.5 भैरव राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) ध

घ) कोई भी नहीं

5.6 भैरव राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

5.7 भैरव राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध प, म ग म रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

5.8 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

5.9 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही गाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

5.10 भैरव राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरव राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत ख्याल/लक्षण गीत (छोटा ख्याल), मध्य तथा तेज लय में गाया जाता है। द्रुत ख्याल/लक्षण गीत में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: ग)

5.2 उत्तर: घ)

5.3 उत्तर: क)

5.4 उत्तर: ग)

5.5 उत्तर: घ)

5.6 उत्तर: ग)

5.7 उत्तर: क)

5.8 उत्तर: ग)

5.9 उत्तर: ख)

5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरव के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

इकाई-6
अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	राग अल्हैया बिलावल
6.3.1	अल्हैया बिलावल राग का परिचय
6.3.2	अल्हैया बिलावल राग का आलाप
6.3.3	अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत
6.3.4	अल्हैया बिलावल राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग अल्हैया बिलावल का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग अल्हैया बिलावल के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग अल्हैया बिलावल का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अल्हैया बिलावल राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- अल्हैया बिलावल राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग अल्हैया बिलावल के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 राग अल्हैया बिलावल

6.3.1 अल्हैया बिलावल राग का परिचय

राग- अल्हैया बिलावल

थाट- अल्हैया बिलावल

जाति- षाड़व-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- गांधार

स्वर - अवरोह में कोमल निषाद (नि), अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में म

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - बिलावल

आरोह- सा ग रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग प ध नि ध प, म ग म रे सा

6.3.2 अल्हैया बिलावल राग का आलाप

- ग रे ग प, प ऽ म ग रे, सा रे ग

  प ऽ म ग म रे सा ।

- सा नि़ ध़ प़ नि़ ध़ ऽ सा, ग रे सा प ऽ म ग म रे सा

- सा ग रे ग प, ध ग म रे, ग रे ग प,

  ग प ध नि ध प, ग रे ग प ध नि

  ध प म ग म रे सा।

- सा ऽ ग, रे ग प ध नि ध प म ग म रे,

  ग प ऽ ध नि ध प, म ग, म रे, सा रे ग

  रे ग प म ग ग रे ग प, ध ग रे ग

  प म ग म रे, सा।

- ग प ध नि, ध नि सां ऽ ऽ ऽ सां गं रें सां, गं

  रें गं पं ऽ मं गं मं रें ऽ सां, गं मं रें सां ऽ ध

  नि ध प म ग प ध ग प ध नि सां ध नि ध

  प म ग म रे, ग प ध प म ग म रे, ग प ध

  नि ध प, म ग म रे सा।

6.3.3 अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत

राग: अल्हैया बिलावल **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थायी															
												सा	रेरे	ग	म
												दा	दिर	दा	रा
ग	-	ग	रे	ग	प	धध	पप	मऽ	गग	ऽरे	गऽ				
दा	-	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ				
												सा	रेरे	ग	म
												दा	दिर	दा	रा
ग	-	ग	रे	ग	प	धध	पप	मऽ	गग	ऽरे	गऽ				
दा	-	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ				
अंतरा															
												प	पप	ध	ध
												दा	दिर	दा	रा
-	नी	सां	सां	सां	रेंरें	गंगं	रेंरें	सां-	सांनी	-नी	ध-				
-	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा-				
												ग	पप	प	ध
												दा	दिर	दा	रा
-	नी	प	म	रे	गग	पप	मम	ग-	गरे	-रे	सा-				
-	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा-				

6.3.4 अल्हैया बिलावल राग के तोड़े

सम से 8वीं मात्रा तक –

- सारे गप मग मरे गप मग मरे सा-
- सारे गप धनि धप मग मरे सारे सा-
- गप धनि सांनि धप धनि धप मग रेसा
- सारे गरे गप मग मरे गप धनि सां-

सम से सम तक –

- सारे गप धप मग रे- गप धनि धप म- गम गप
  धनि सांनि धप धनि सारें गरें सा-
- सांनि सांनि धनि धनि धप धप मग मग रेग रेग
  गरे सांनि सांनि धनि धप

5वीं मात्रा से

- सारे सारे गरे गप गप धनि धप मग रेग पम गरे सा-
- गप धनि सारें गरें सांनि धनि सांनि धनि धप मग रेग पम

सम से सम तक –

- सारे गप धनि सारें सांनि धप मग मरे गप धनि
  सारें गरें सांनि धप मग रेसा

- सारे गरे गप गप धप धनि धनि धप धप गप धनि

  सारें गरें सांनि धप

- सारे गप मरे मरे गप धनि धप मग मरे गप धनि

  सारें सांनि धप मग रेसा

- सारें सांनि सानि धप धनि सारे गम रेसा गप मग

  रेग पध गप धनि पध निसां

- गरे गप धनि सांनि धनि धप धनि सां- गरे सांनि धनि

  सारें सांनि धनि सांनि धप

- गरे गप धनि सांनि धनि धनि धप धप धनि

  धप मग मरे गरे गप ध़नि़ सा-

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 अल्हैया बिलावल राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

6.2 अल्हैया बिलावल राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

6.3 अल्हैया बिलावल राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

6.4 अल्हैया बिलावल राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

6.5 अल्हैया बिलावल राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

6.6 अल्हैया बिलावल राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) विलावल

घ) तोड़ी

6.7 अल्हैया बिलावल राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

6.8 अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

6.9 अल्हैया बिलावल राग की द्रुत गत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

6.10 अल्हैया बिलावल राग, विलावल तथा अल्हैया रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

6.4 सारांश

अल्हैया बिलावल राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। अल्हैया बिलावल राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: ग)

6.2 उत्तर: घ)

6.3 उत्तर: क)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: ग)

6.6 उत्तर: ग)

6.7 उत्तर: क)

6.8 उत्तर: ग)

6.9 उत्तर: ख)

6.10 उत्तर: ख)

6.7 संदर्भ

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग अल्हैया बिलावल का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग अल्हैया बिलावल की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-7
काफी राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	राग काफी
7.3.1	काफी राग का परिचय
7.3.2	काफी राग का आलाप
7.3.3	काफी राग की द्रुत गत
7.3.4	काफी राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग काफी का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग काफी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग काफी का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- काफी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- काफी राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- काफी राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- काफी राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- काफी राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग काफी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 राग काफी

7.3.1 काफी राग का परिचय

राग- काफी

थाट- काफी

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- पंचम

संवादी- रिषभ

स्वर - गंधार, निषाद कोमल (ग नि), अन्य स्वर शुद्ध

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - सा सा, रे - रे रे, ग ग म म प

यह काफी थाट का आश्रम राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। पंचम स्वर वादी तथा रिषभ स्वर संवादी है। काफी राग में गंधार तथा निषाद स्वर कोमल प्रयुक्त होते हैं। शेष स्वर शुद्ध हैं। इसका समय रात्रि का दूसरा प्रहर माना गया है। काफी राग में पंचम स्वर को महत्वपूर्ण स्वर कहा जाता है। सभी स्वर संगतियाँ पंचम की ओर बढ़ती हुई लगती हैं, जैसे - सा रे,

ग रे, रे ग म - म प, रे ग म प म $\overline{\text{निध}}$प। इस राग में पंचम तथा गंधार की संगति का अधिक प्रयोग होता है, जैसे - म प $^{\text{म}}$ग रे, म प ध म प $^{\text{म}}$ग रे। काफी राग में जितनी बार पंचम पर जाते हैं उतनी बार कोमल निषाद से धैवत का स्पर्श करते हुए मींड से पंचम पर आते हैं। पंचम पर यह क्रिया काफी राग की सबसे बड़ी पहचान है, जैसे ग रे ग म ऽ म ऽ $\overline{\text{निध}}$प आदि। काफी का आरोह तीन भागों में बाँटा जा सकता है 1. स रे $^{\text{म}}$ग रे, 2. रे ग म प 3. म प नि सां या म प ध नि सां। इसी प्रकार अवरोह भी तीन भागों में है 1 सां नि ध प, 2 ध म प $^{\text{म}}$ग रे 3 रे नी सा। काफी राग का विकास मुख्य रूप से होली के अवसर पर गाई जाने वाली लोकधुन से हुआ है। ठुमरी आदि के लिए इस राग को मुख्य राग माना जाता है।

7.3.2 काफी राग का आलाप

- सा रे सा, रे ग, रे ग म ग, रे ग रे रे म प - म प ग रे, म प ध म प म प ग रे, सा रे रे ग ग रे सा, म प, ग म प ग रे नि सा।
- नि नि सा ग रे सा, रे रे ग ग रे सा, म प ध म प ग, रे, ग म ग रे, प ग रे, म ग, रे म ग रे सा।
- नि सा रे ग म प, ग म ग रे, नि सा नि ध नि सा नि ध़ प़ म़ ध़ नि सा, ग रे नि सा, म प, ग म प ध नि ध प ,ग रे सा, सा रे ग म प ध ध प ध ध प, म प ध प, ग म प ध नि सां नि ध प, म प म ग म ग रे सा।
- सा सा रे रे प, म प ग म प, नि ध प, सां नि ध नि ध प, म प ध नि ध प, म ध नि सां, नि ध प सां नि ध नि ध प म ग रे ग म प, ध प म प, रे ग म प, ध नि सां गं रें सां रें सां नि ध प ध प ग म ग रे ग म प, म ग रे सा।

7.3.3 काफी राग की द्रुत गत

राग: काफी **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								सा	रेरे	रे	ग-	-	प	म	म
								दा	दिर	दा	रा	-	दा	रा	दा
प	-	प	म	ग	रे	सा	नी								
दा	-	दा	रा	दा	रा	दा	रा								
								सा	रेरे	रे	ग-	-	प	म	म
								दा	दिर	दा	रा	-	दा	रा	दा
प	-	प	म	ग	रे	सा	नी								
दा	-	दा	रा	दा	रा	दा	रा								
अंतरा															
प	-	-	म	प	ध	नी	सां	नी	धध	मम	पप	म-	मग	-ग	रे-
दा	-	-	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-रा	दा-
रे	नीनी	ध	नी	प	धध	म	प	ग	मम	पप	मम	ग-	गरे	-रे	सा-
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा-	रदा	-र	दा-
प	-	प	म	ग	रे	सा	नी								
दा	-	दा	रा	दा	रा	दा	रा								

7.3.4 काफी राग के तोड़े

सम से 8वीं मात्रा तक

- सांनि धप मग रेसा सारे गम पध निसां
- सांनि निध धप पम मग गरे रेसा सारे
- सारे गग रेग मम गम पप मप धध
- पध निनि धनि सांसां सांनि धप मग रेसा

सम से सम तक

- निनि सारे ग- गम प- --

  निनि सारे ग- गम प- --

  निनि सारे ग- गम
- सारे गग रेग मम गम पप मप धध

  पध निनि धनि सांसां रेंसां निध पम गरे

  सासा रेरे ग- मम प- -- सासा रेरे ग-

  मम प- -- सासा रेरे ग- मम
- धनि सारें गरें सारें सारें गंमं गरें सांसां

  निसां निध मग गम पध मग रेसा सा-

  रे- ग- म- प- -- सा- रे- ग- म-

प- -- सा- रे- ग- म-

खाली से सम तक

- नि़नि़ ध़प़ गग रेसा नि़नि़ धप गंगं रेंसां

  निध पध निसां रेंगं रेंसां निसां निध

  पम गम पम गरे सा- निसा सारे रेग गम

खाली से सम तक

- नि़नि़ ध़प गग रेसा निनि धप गंगं रेसां

  निध पध निसां रेंगं रेंसां निसां निध

  पम गम पम गरे सा- नि़सा सारे रेग गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 काफी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

7.2 काफी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

7.3 काफी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि कस दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

7.4 काफी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

7.5 काफी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) कोई भी नहीं

7.6 काफी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) काफी

घ) तोड़ी

7.7 काफी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

7.8 काफी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

7.9 काफी राग की द्रुत गत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

7.10 काफी राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

7.4 सारांश

काफी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। काफी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य तथा तेज लय में बजाई जाती है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

7.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: ग)

7.2 उत्तर: घ)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: क)

7.5 उत्तर: घ)

7.6 उत्तर: ग)

7.7 उत्तर: क)

7.8 उत्तर: ग)

7.9 उत्तर: ख)

7.10 उत्तर: ख)

7.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग काफी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग काफी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग काफी की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग काफी की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-8
भैरव राग की द्रुत गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	राग भैरव
8.3.1	भैरव राग का परिचय
8.3.2	भैरव राग का आलाप
8.3.3	भैरव राग की द्रुत गत
8.3.4	भैरव राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग भैरव का परिचय, आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरव के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरव का आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- भैरव राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

- भैरव राग के आलाप, द्रुत गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरव के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 राग भैरव

8.3.1 भैरव राग का परिचय

राग- भैरव

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - ऋषभ, धैवत (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - ऩी सा ग म ध ध प, ग म रे रे सा

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका वादी धैवत तथा संवादी रिषभ है। भैरव राग का समय दिन का प्रथम प्रहर माना गया है।

भैरव राग में रिषभ को लगाने का अलग तरीका है। अगर हमने आरोह करते समय षड्ज से ऋषभ, गंधार, मध्यम तक जाना हो तो हम रिषभ का प्रयोग करते हैं, जैसे- सा रे, सा रे ग सा रे ग म। परन्तु यदि हमने पंचम का प्रयोग करना हो तो हम रिषभ का लंघन करते हैं, जैसे- सा रे ग म, सा ग म प अर्थात् उत्तरांग की तरफ जाते समय (पंचम या उससे आगे) हम रिषभ का लंघन करते हैं। अवरोह करते समय रिषभ पर आंदोलन किया जाता है। यह आंदोलन दो, तीन बार तक किया जाता है। इसी प्रकार धैवत पर भी आंदोलन होता है। धैवत पर आंदोलन आरोह तथा अवरोह दोनों तरफ होता है जबकि रिषभ में केवल अवरोह के समय ही आंदोलन किया जाता है; जैसे- ग म ग रे रे ऽ रे ऽ ग म नि ध ऽ ध ऽ प।

यह एक स्वतंत्र राग है। इसमें किसी अन्य राग की छाया नहीं आती है। कई अन्य रागों में भैरव अंग जोड़कर अन्य रागों की रचना की गई है, जैसे- भैरव बहार, अहीर भैरव आदि। भैरव का समप्रकृतिक राग कलिंगड़ा है। भैरव राग जहाँ गंभीर प्रकृति का राग है वहीं कलिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर न्यास किया जाता है वहीं कलिंगड़ा में गंधार तथा पंचम पर न्यास होता है। भैरव राग में रिषभ तथा धैवत पर आंदोलन अधिक रहता है। यह आंदोलन ही भैरव का मुख्य अंग है परन्तु कलिंगड़ा राग में इस प्रकार का आंदोलन बहुत कम रहता है।

8.3.2 भैरव राग का आलाप

- सा रे रे सा, सा ध, नि नि ध, नि ध प, प
  ध नि सा रे रे सा।
- नि सा ग म रे सा, ध नि नि रे सां, ध नि ध प,
  प म ग प, ग म प ग म रे रे सा।
- ग म प ध प, नि सा ग म रे नि सा ग म ध प,
  म प ध प, ग म रे रे सा।

- ग म प ध̲, ध̲ ध̲ सां ध̲ नि ध प, ध̲ नि सां रें̲ सां,

  सां नि ध̲ ध̲ नि ध̲ प, ध̲ प म ग म ध̲ प ग म रे̲,

  रे̲ सां नि ध̲ नि सां रे सां, सां नि ध̲ प म ग रे̲ सा

- ग म ध̲ – नि- नि सां, सां रें̲, सां गं मं रें̲ रें̲ सां रें̲ सां

  नि ध̲ ध̲ प, ध प म ग म ध̲ प, ग म रें̲ रें̲ सां

  नि ध̲ ध̲ प ध̲ प म ग म ध̲ प ग म रे̲ - रे̲ – सा।

8.3.3 भैरव राग की द्रुत गत

राग: भैरव **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								सां	ध̲ध̲	प	ध̲	म	पप	ग	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	-	ध̲	प	म	गग	रे̲	सा								
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध̲	नीनी	सा	रे̲	ग	मम	रे̲	सा
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ग	मम	ध̲	प	ग-	गरे̲	-रे̲	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा-	रदा	-र	सा-								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा:															
								ग दा	मम दिर	ध दा	नी रा	म दा	धध दिर	नी दा	नी रा
सां दा	- -	सां दा	सां रा	गं दा	मंमं दिर	रें दा	सां रा								
								सां दा	रेंरें दिर	नी दा	सां रा	ध दा	*नीनी* दिर	प दा	*ध* रा
म दा	पप दिर	गग दा	मम रा	ग- दा-	गरे रदा	-रे -र	सा सा-								

8.3.4 भैरव राग के तोड़े

सम से सम तक:-

- सांनि धप मग रेसा निसा गम रेसा निसा सांनि सांनि धप

  म- निध निध पम गरे

- सांनि सांनि धप निध निध पम गरे निसा सारे गग

  रेग मम गम पप गम रेसा

- सारे गग रेग मम गम पप मप धध पध निनि धनि सांसां

  निध पम गम रेसा

सम से खाली तक:-

- ऩिसा गम धध पम गम पम गरे ऩिसा पम गम

  धध पम पम गम रेसा ऩिसा

सम से सम तक:-

- निसां गंमं गरें सांनि धनि सारें सांनि धप मप धनि

  धप मप गम रेरे सासा ऩिसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 भैरव राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

8.2 भैरव राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) प

घ) रे

8.3 भैरव राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

8.4 भैरव राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) धैवत

घ) कोई भी नहीं

8.5 भैरव राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) म

ग) ध

घ) कोई भी नहीं

8.6 भैरव राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

8.7 भैरव राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध प, म ग म रे सा

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ग प ध नी

घ) ध नि सां रें नी ध प, म ग

8.8 भैरव राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

8.9 भैरव राग की द्रुत ख्याल/लक्षण गीत को केवल तीनताल में ही बजाया जाता है।

क) हां

ख) नहीं

8.10 भैरव राग, कल्याण तथा कामोद रागों का मिश्रण है।

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। भैरव राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत, मध्य तथा तेज लय में बजाई जाती है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में बताई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।

- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: ग)

8.2 उत्तर: घ)

8.3 उत्तर: क)

8.4 उत्तर: ग)

8.5 उत्तर: घ)

8.6 उत्तर: ग)

8.7 उत्तर: क)

8.8 उत्तर: ग)

8.9 उत्तर: ख)

8.10 उत्तर: ख)

8.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरव का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग भैरव का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव की द्रुत गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरव की द्रुत गत के पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-9
अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों के अलंकार (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों का परिचय तथा अलंकार
9.3.1	अल्हैया बिलावल राग का परिचय
9.3.2	अल्हैया बिलावल राग के अलंकार
9.3.3	काफी राग का परिचय
9.3.4	काफी के अलंकार
9.3.5	काफी राग का परिचय
9.3.6	काफी राग के अलंकार
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह नवम् इकाई है। इस इकाई में वादन संदर्भ में, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों का संक्षिप्त परिचय तथा उसके अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, तथा आनंददायक होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जब स्वरों का आरो या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है। इसे पलटा भी कहते हैं। इससे स्वर-ज्ञान के साथ-साथ लय तथा लयकारियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा इन्हीं अलंकारों मे माध्यम से अन्य अलंकारों की रचना करने में सहायता मिलती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप के साथ-साथ उनमें बजाए जाने वाले कुछ प्रारम्भिक अलंकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे, उन्हें भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को सितार वाद्य पर बजा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।

- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के स्वरूप के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को लिखने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों के अलंकारों को बजाने में सक्षम होगा।
- विद्यार्थी, वादन के अंतर्गत, कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, वादन के अंतर्गत, अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव रागों में अलंकारों के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 अल्हैया बिलावल, काफी तथा भैरव रागों का परिचय तथा अलंकार (वादन के संदर्भ में)

9.3.1 अल्हैया बिलावल राग का परिचय

थाट- अल्हैया बिलावल

जाति- षाड़व-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- गांधार

स्वर - अवरोह में कोमल निषाद (नि), अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित स्वर - आरोह में म

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - बिलावल

आरोह- सा ग रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ - ग प ध नि ध प, म ग म रे सा

9.3.2 अल्हैया बिलावल राग के अलंकार

1 आरोह- सा रे ग प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

2 आरोह- सा सा, रे रे, ग ग, प प, ध ध, नि नि, सां सां

अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

3 आरोह- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

4 आरोह- सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

अवरोह- सां रें सां, नि सां नि, ध नि ध, प ध प, म प म, ग म ग, रे ग रे, सा रे सा

5 आरोह- सा रे ग, रे ग प, प ध नि, ध नि सां

अवरोह- सां नि ध, नि ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

6 आरोह- सा रे ग प, रे ग प ध, ग प ध नि, प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प, नि ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

7 आरोह- सा रे ग प ध, रे ग प ध नि, ग प ध नि सां, प ध नि सां रें, ध नि सां रें गं

अवरोह- गंरेंसांनिध, रेंसांनिधप, सांनिधपग, निधपगरे, धपगरेसा

8 आरोह- सागरे, रेगप, गपध, धपनि, पनिसां, निसांरें

अवरोह- निरें सां, धसांनि, पनिध, मधप, गपम, रेमग, सागरे

9 आरोह- सारेगसा, रेगपरे, गपगध, पधपनि, पधनिप,

धनिसांध, निसांरेंनि, सांरेंगंसां

अवरोह- सांरेंगंसां, निसांरेंनि, धनिसांध, पधनिप, मपधम,

गमपग, रेगमरे, सारेगसा

10 आरोह- सागरेसा, रेम गरे, गपमग, मधपम, पनिधप,

धसांनिध, निरेंसांनि, सांगंरेंसां

अवरोह- सांगंरेंसां, निरेंसांनि, धसांनिध, पनिधप, मधपम,

गपमग, रेमगरे, सागरेसा

11 आरोह- सागमरेसा, रेपमगरे, गपधमग, पधनिपम,

पनिसांधप, धसांरेंनिध, निरेंगंसांनि, सांगंमंरेंसां

अवरोह- सांगंमंरेंसां, निरेंगंसांनि, धसांरेंनिध, पनिसांधप,

मधनिपम, गपधमग, रेमपगरे, सागमरेसा

12 आरोह- साग, रेप, गध, पनि, धसां

अवरोह- सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा

13 आरोह- साम, रेप, गध, पनि, धसां

अवरोह- सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा

14 आरोह- सा प, रे ध, ग नि, प सां

अवरोह- सां प, नि ग, ध रे, प सा

15 आरोह- सा रे सा रे ग, रे ग रे ग प, ग प ग प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

अवरोह- सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म, प म प म ग, म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

16 आरोह- सा रे ग सा रे ग प, रे ग प रे ग प ध, ग प ध ग प ध नि, प ध नि प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म, ध प म ध प म ग, प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17 आरोह- सा रे, रे ग, ग प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18 आरोह- सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग प ग रे, ग प ग ग प प म ग, प ध प प ध नी ध प,

ध नी ध ध नि सां नी ध, नि सां नी नी सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नी नि सां रें सां नी, ध नी ध ध नि सां नी ध, प ध प प ध नी ध प

म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग, रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19 आरोह- सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे प ग प ग प ग ध, प ध प ध प नि, ध नी ध नी ध सां

अवरोह- सां नी सां नि सां ध, नी ध नी ध नी प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20 आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग प, ग प ध प, प ध ध नी ध नी नि सां

अवरोह- सां नी नी ध, नी ध ध प, ध प प म, प म म ग, म ग ग रे, ग रे रे सा

9.3.3 काफी राग का परिचय

थाट- काफी

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- पंचम

संवादी- रिषभ

स्वर - गंधार, निषाद कोमल (ग नि), अन्य स्वर शुद्ध

समय - रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा रे ग म प ध नी सां

अवरोह- सां नी ध प म ग रे सा

पकड़ - सा सा, रे - रे रे, ग ग म म प

9.3.4 काफी राग के अलंकार

1 आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध प म ग रे सा

2 आरोह- सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि, सां सां

अवरोह- सां सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

3 आरोह- सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध ध ध, प प प, म म म, ग ग ग, रे रे रे, सा सा सा

4 आरोह- सा रे सा, रे ग रे, ग म ग, म प म, प ध प, ध नि ध, नि सां नि, सां रें सां

अवरोह- सांरेंसां, निसांनि, धनिध, पधप, मपम, गमग, रेगरे, सारेसा

5 आरोह- सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां

अवरोह- सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा

6 आरोह- सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां

अवरोह- सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा

7 आरोह- सारेगमप, रेगमपध, गमपधनि, मपधनिसां

अवरोह- सांनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेसा

8 आरोह- सागरे, रेमग, गपम, मधप, पनिध, धसांनि, निरेंसां

अवरोह- निरेसां, धसांनि, पनिध, मधप, गपम, रेमग, सागरे

9 आरोह- सारेग सा, रेगमरे, गमपग, मपधम, पधनिप,

धनिसांध, निसांरेंनि, सांरेंगंसां

अवरोह- सांरेंग सां, निसांरेंनी धनी सांध, पधनी प,

मपधम, ग मपग रेगमरे, सारेगसा

10 आरोह- सागरेसा, रेमग रे, गपमग, मधपम, पनी धप,

धसांनी ध, नीरेंसांनी, सांगंरेंसां

अवरोह- सांगंरेंसां, नीरेंसांनी, धसांनीध, पनीधप, मधपम,

गपमग रेमगरे, सागरेसा

11 आरोह- सागमरेसा, रेमपगरे, गपधमग, मधनीपम, पनी सांधप,

धसांरेंनीध,   नीरेंगंसांनी,   सांगं मंरेंसां

अवरोह- सांगंमंरेंसां,   नीरेंगंसांनी धसांरेंनीध,   पनीसांधप,   मधनीपम,

ग पधमग,   रेमपगरे,   सागमरेसा

12 आरोह- साग,   रेम,   गप,   मध,   पनी   धसां

अवरोह- सांध,   नीप,   धम,   पग,   मरे,   गसा

13 आरोह- साम,   रेप,   गध,   मनी,   पसां

अवरोह- सांप,   नीम,   धग परे,   मसा

14 आरोह- साप,   रेध,   गनी,   पसां

अवरोह- सांप,   नी.ग,   धरे,   पसा

15 आरोह- सारे सारेग,   रेग रेगम,   गम गमप,   मप मपध,   पध पधनी   धनीधनीसां

अवरोह- सांनी सांनीध,   नी ध नी धप,   धप धपम,   पम पमग,   मग मगरे,   गरे गरेसा

16 आरोह- सारेगसारेगम,   रेगमरेगमप,   गमपगमपध,   मपधमपधनि,   पधनीपधनी सां

अवरोह- सांनीधसांनीधप,   नीधपनी धपम,   धपमधपमग,   पमगपमगरे,   मगरेमगरेसा

17 आरोह- सारे,   रेग,   गम,   मप,   पध,   धनी,   नी सां

अवरोह- सांनी,   नीध,   धप,   पम,   मग,   गरे,   रेसा

18 आरोह- सारेसासारेगरेसा,   रेगरेरेगमगरे,   गमग गमपमग   मपम मपधपम,

पधपपधनीधप,   धनीधधनीसांनीध,   नीसांनीनीसांरेंसांनी   सांरेंसांसांरेंगंरेंसां

अवरोह- सांरेंसांसांरेंगंरेंसां,   नीसांनीनीसांरेंसांनी   धनीधधनीसांनीध,   पधपपधनीधप,

म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग, रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19 आरोह- सा रे सा रे सा ग रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

प ध प ध प नी ध नी ध नी ध सां

अवरोह- सां नी सां नी सां ध, नी ध नी ध नी प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20 आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध, प ध ध नी ध नी नी सां

अवरोह- सां नी नी ध, नी ध ध प, ध प प म, प म म ग म ग ग रे, ग रे रे सा

9.3.5 भैरव राग का परिचय

थाट- भैरव

जाति- संपूर्ण-संपूर्ण

वादी- धैवत

संवादी- रिषभ

स्वर - रिषभ, धैवत कोमल (रे, ध), अन्य स्वर शुद्ध

समय - दिन का प्रथम प्रहर

समप्रकृतिक राग - कलिंगड़ा

आरोह- सा रे ग म प ध नि सां

अवरोह- सा नि ध, प म ग म रे सा

पकड़ - नि सा ग म धध प, म ग मरे सा

9.3.6 भैरव राग के अलंकार

1. आरोह- सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां

   अवरोह- सां नि ध प म ग रे॒ सा

2. आरोह- सा सा, रे॒ रे॒, ग ग, म म, प प, ध॒ ध॒, नि नि, सां सां

   अवरोह- सां सां, नि नि, ध॒ ध॒, प प, म म, ग ग, रे॒ रे॒ सा सा

3. आरोह- सा सा सा, रे॒ रे॒ रे॒, ग ग ग, म म म, प प प, ध॒ ध॒ ध॒, नि नि नि, सां सां सां

   अवरोह- सां सां सां, नि नि नि, ध॒ ध॒ ध॒, प प प, म म म, ग ग ग, रे॒ रे॒ रे॒ सा सा सा

4. आरोह- सा रे॒ सा, रे॒ ग रे॒ ग म ग, म प म, प ध॒ प, ध॒ नि ध॒, नि सां नि, सां रे॒ सां

   अवरोह- सां रे॒ सां, नि सां नि, ध॒ नि ध॒, प ध॒ प, म प म, ग म ग, रे॒ ग रे॒ सा रे॒ सा

5. आरोह- सा रे॒ ग, रे॒ ग म, ग म प, म प ध॒, प ध॒ नि, ध॒ नि सां

   अवरोह- सां नि ध॒, नि ध॒ प, ध॒ प म, प म ग, म ग रे॒ ग रे॒ सा

6. आरोह- सा रे॒ ग म, रे॒ ग म प, ग म प ध॒, म प ध॒ नि, प ध॒ नि सां

   अवरोह- सां नि ध॒ प, नि ध॒ प म, ध॒ प म ग, प म ग रे॒, म ग रे॒ सा

7. आरोह- सा रे॒ ग म प, रे॒ ग म प ध॒, ग म प ध॒ नि, म प ध॒ नि सां

   अवरोह- सां नि ध॒ प म, नि ध॒ प म ग, ध॒ प म ग रे॒ प म ग रे॒ सा

8. आरोह- सा ग रे॒ रे॒ म ग, ग प म, म ध॒ प, प नि ध॒ सां नि, नि रे॒ सां

   अवरोह- नि रे॒ सां, ध॒ सां नि, प नि ध॒, म ध॒ प, ग प म, रे॒ म ग, सा ग रे॒

9. आरोह- सा रे॒ ग सा, रे॒ ग म रे॒ ग म प ग, म प ध॒ म, प ध॒ नि प,

ध नि सां ध, नि सां रें नि, सां रें गं सां

अवरोह- सां रें गं सां, नि सां रें नि, ध नि सां ध, प ध नि प,

म प ध म, ग म प ग, रे ग म रे, सा रे ग सा

10. आरोह- सा ग रे सा, रे म ग रे, ग प म ग, म ध प म, प नि ध प,

ध सां नि ध, नि रें सां नि, सां गं रें सां

अवरोह- सां गं रें सां, नि रें सां नि, ध सां नि ध, प नि ध प, म ध प म,

ग प म ग, रे म ग रे, सा ग रे सा

11. आरोह- सा ग म रे सा, रे म प ग रे, ग प ध म ग, म ध नि प म,

प नि सां ध प, ध सां रें नि ध, नि रें गं सां नि, सां गं मं रें सां

अवरोह- सां गं मं रें सां, नि रें गं सां नि, ध सां रें नि ध, प नि सां ध प,

म ध नि प म, ग प ध म ग, रे म प ग रे, सा ग म रे सा

12. आरोह- सा ग, रे म, ग प, म ध, प नि, ध सां

अवरोह- सां ध, नि प, ध म, प ग, म रे, ग सा

13. आरोह- सा म, रे प, ग ध, म नि, प सां

अवरोह- सां प, नि म, ध ग, प रे, म सा

14. आरोह- सा प, रे ध, ग नि, प सां

अवरोह- सां प, नि ग, ध रे, प सा

15. आरोह- सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां

अवरोह- सां नि सां नि ध, नि ध नि ध प, ध प ध प म, प म प म ग, म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

16. आरोह- सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म प ध,

म प ध म प ध नि, प ध नि प ध नि सां

अवरोह- सां नि ध सां नि ध प, नि ध प नि ध प म, ध प म ध प म ग,

प म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे सा

17. आरोह- सा रे, रे ग, ग म, म प, प ध, ध नि, नि सां

अवरोह- सां नि, नि ध, ध प, प म, म ग, ग रे, रे सा

18. आरोह- सा रे सा सा रे ग रे सा, रे ग रे रे ग म ग रे, ग म ग ग म प म ग, म प म म प ध प म,

प ध प प ध नि ध प, ध नि ध ध नि सां नि ध, नि सां नि नि सां रें सां नि, सां रें सां सां रें गं रें सां

अवरोह- सां रें सां सां रें गं रें सां, नि सां नि नि सां रें सां नि, ध नि ध ध नि सां नि ध, प ध प प ध नि ध प,

म प म म प ध प म, ग म ग ग म प म ग, रे ग रे रे ग म ग रे, सा रे सा सा रे ग रे सा

19. आरोह- सा रे सा रे सा ग, रे ग रे ग रे म, ग म ग म ग प, म प म प म ध,

प ध प ध प नि, ध नि ध नि ध सां

अवरोह- सां नि सां नि सां ध, नि ध नि ध नि प, ध प ध प ध म, प म प म प ग,

म ग म ग म रे, ग रे ग रे ग सा

20. आरोह- सा रे रे ग, रे ग ग म, ग म म प, म प प ध, प ध ध नि, ध नि नि सां

अवरोह- सां नि नि ध, नि ध ध प, ध प प म, प म म ग, म ग ग रे, ग रे रे सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 जब स्वरों का आरोह या अवरोह नियमानुसार किया जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) तोड़ा

घ) लय

9.2 वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को क्या कहते हैं?

क) तान

ख) अलंकार

ग) लय

घ) संगीत

9.3 निम्न में से कौन सा अलंकार अल्हैया बिलावल राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि, सां सां सां

9.4 निम्न में से कौन सा अलंकार अल्हैया बिलावल राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म,

9.5 निम्न में से कौन सा अलंकार काफी राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

9.6 निम्न में से कौन सा अलंकार काफी राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

9.7 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म प प प, ध ध ध,

ख) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, म म म, प प प, ध ध ध

ग) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

घ) सा सा सा, रे रे रे, ग ग ग, प प प, ध ध ध, नि नि नि,

9.8 निम्न में से कौन सा अलंकार भैरव राग का है?

क) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ख) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

ग) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

घ) सां सां, नि नि , ध ध, प प, म म, ग ग

9.4 सारांश

अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग हैं। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इन रागों को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए अलंकारों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। यह अलंकार अलग-अलग छंदों में होते हैं जो विलंबित लय में, मध्य लय में तथा द्रुत लय में बजाए जाते हैं। इन्हीं अलंकारों से, रागों के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों तथा तानों का निर्माण किया जाता है।

9.5 शब्दावली

- अलंकार: साधारण शब्दों में जब स्वरों का आरोह या अवरोह (चलन) नियम के अनुसार किया जाता है तो उसे अलंकार कहा जाता है।
- लय: वादन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/वादन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: ख)

9.2 उत्तर: ग)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: घ)

9.7 उत्तर: ख)

9.8 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा से प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग काफी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 5. राग काफी के पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 6. राग भैरव के पांच अलंकार लिखिए।

इकाई-10
मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक (सितार वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	मिजराब तथा उसके बोल (सितार वादन के संदर्भ में)
10.3.1	मिजराब तथा उसकी धारण विधि
10.3.2	मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित बोल
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य का प्रयोग विशेष रूप से होता है। सितार वाद्य को अंगुली में मिजराब पहनकर बजाया जाता है। मिजराब पहनकर बजाने से आवाज जोर से आती है तथा अंगुली भी ठीक रहती है। इसी के प्रयोग से अलग अलग बोलों का निर्माण होता है। जिसके कारण राग/ सांगीतिक प्रस्तुति सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय तथा आनंददायक बन जाती है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य को सीखने के लिए मिजराब के बोलों का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे हाथ की तैयारी के साथ-साथ लय बढती जाती है। इससे विद्यार्थियों में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास संभव होता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से सितार वाद्य पर बजा सकेगें।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक की जानकारी प्रदान करना।
- सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों की मूलभूत तकनीक के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, सितार वादन के संदर्भ में मिज़राब के बोलों द्वारा अपनी कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में वादन के अंतर्गत विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

10.3 मिजराब तथा उसके बोल (सितार वादन के संदर्भ में)

10.3.1 मिजराब तथा उसकी धारण विधि

सितार के तार पर आघात कर स्वरोत्पति की प्रक्रिया मिजराब द्वारा सम्पन्न होती है। मिजराब धारण करना व मिजराब के आकार आदि की सितार वादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है, मिजराब कहलाती है। मिजराब एक कोण की तरह बना हुआ होता है, जिसके ऊपर दो तारें इस तरह से कोण से बंधी हुई होती है कि वह एक पंख की शक्ल ग्रहण कर लेता है।

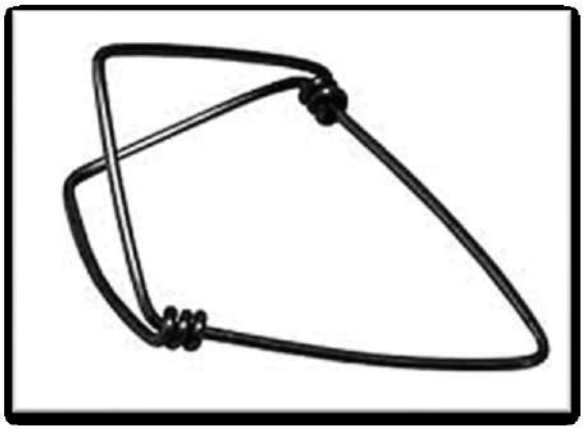

मिजराब को दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली पर पर इस प्रकार धारण करना चाहिए कि मिजराब के ऊपरी भाग यानि पंखों या चिमटी के बीच से दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली को गुजारना होगा। मिजराब का जोड़ एक नाखून के ऊपर तथा दूसरा नीचे की तरफ होना चाहिए।

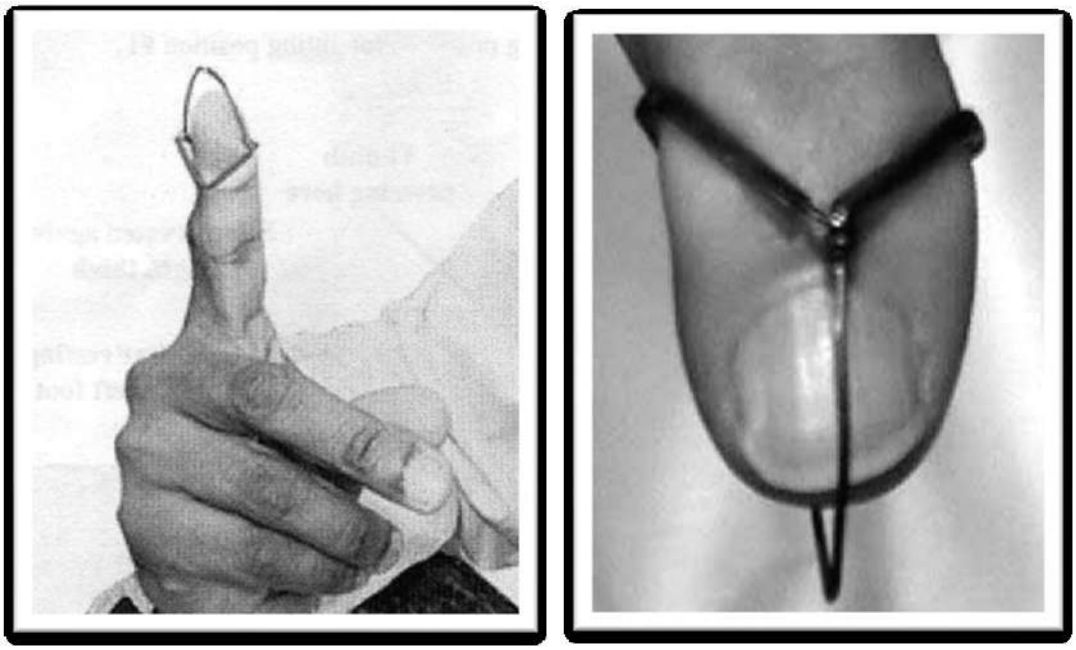

अंगुली पर मिजराब की स्थिति

मिजराब का लम्बा सिरा तार पर आघात करने के लिए बाहर की ओर निकला रहे तथा टोकरीनुमा भाग तर्जनी उँगली के अगले भाग को चिमटे की तरह दबाए रखे। मिजराब धारण करते समय इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि पंख या चिमटी तर्जनी उंगली के प्रथम जोड़ तक ही रहे। जोड़ से न आगे जाएँ और न ही पीछे, अन्यथा उंगली के द्रुत संचालन में रुकावट पड़ेगी। आजकल एक मिज़राब से ही सितार वादन किया जाता है, किन्तु पुरानी पीढ़ी के कलाकार तर्जनी तथा मध्यमा उंगली में दो मिजराब पहन कर वादन करते थे।

10.3.2 मिज़राब के आघात द्वारा उत्पादित बोल

तन्त्री वाद्यों पर विभिन्न प्रकार के प्रहारों को संगीत की भाषा में 'बोल' कहते है। मिजराब की सहायता से सितार वादक दो तरह के आघात करते हैं आकर्ष प्रहार और अपकर्ष प्रहार।

सितार पर मिजराब द्वारा आघात करने से 'दा' और 'रा' दो बोल निकलते हैं। मूलरूप से इन बोलों को 'दे' और 'रु' के नाम से भी जाना जाता है। पहले, इन दोनों बोलों को 'दा' की अपेक्षा 'डा' और रा की अपेक्षा 'ड़ा' कहा जाता था।

श्री एस.एस. टैगोर के अनुसार, दा या डा को 'डा', 'डे' या 'डी' बोल कहते हैं तथा रा या डा़ को 'रा', 'रे', 'री' भी कहते हैं। उपरोक्त डा, डे, डी तीनों बोल एक ही कार्य को तथा रा, रे री बोल भी एक ही प्रणाली को दर्शाते हैं।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा'

मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर बाहर से अन्दर की ओर अर्थात अपनी ओर प्रहार करने पर जो ध्वनि या बोल बनता है, उसे 'दा' का बोल कहते है। इसे 'आकर्ष प्रहार' कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'दा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा'

मिज़राब युक्त तर्जनी उंगली से जब तार पर अन्दर से बाहर की ओर अर्थात् अपने से विपरीत दिशा में प्रहार करने पर जिस बोल की उत्पत्ति होती है उसे 'रा' कहते है। इसे 'अपकर्ष प्रहार' भी कहा जाता है।

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की पहली स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की दूसरी स्थिति

मिज़राब द्वारा उत्पन्न बोल 'रा' बजाने में हाथ की तीसरी स्थिति

इस 'रा' के उल्टे प्रहार में हमें कभी-कभी बाज की तार के साथ जोड़े की तार की ध्वनि भी सुनाई पड़ती। अतः मुख्य रूप से यह दो बोल 'दा' और 'रा' एक-एक मात्रिक काल में बजते हैं।

विद्वानों द्वारा उपरोक्त 'दा' तथा 'रा' के बोलों को विलम्बित लय में 'डा', 'रा', मध्यलय में 'डे', 'रे' तथा द्रुतलय में 'डी', 'री' कहा गया है।

इन दोनों बोलों के सहयोग से अन्य कई प्रकार के बोल बनाए जा सकते हैं जो कि क्रमशः एक मात्रा, डेढ़ मात्रा, एक चैथाई मात्रा काल में बनाए जाते हैं, जिन्हें 'दारा' अथवा 'दिर', 'द्रा', दाऽरा, द्राऽऽर, दाऽऽर के नाम से जाना जाता है।

'दा रा' अथवा 'दिर'

'दा' और 'रा' को प्रायः लगभग एक-एक मात्रा काल का बोल माना गया है। 'दा' और 'रा' के बोल को द्रुत लय में न बजा कर केवल मध्य लय में एक मात्रा काल में ही मिज़राब द्वारा आघात करने से 'दारा' का बोल बनता है और इसी प्रकार यदि 'दारा' को द्रुत लय में जल्दी से अर्थात एक मात्रा काल में दोनों बोलों को एक साथ बजाने से 'दिर' बोल बन जाता है। आज की अपेक्षा 'दिर' बोल को पहले 'डिड़', 'दिड़' तथा 'डिरी' भी कहा जाता था। जिसका प्रयोग दो स्वरों या एक ही स्वर को दो बार बजाने के लिए किया जाता था।

दाऽरा

जब 'दा' प्रहार को एक मात्रा में बजाएँ तथा उसे साथ ही 'रा' के बोल को केवल आधी मात्रा में बजाएँ तो मिजराब द्वारा 'दाऽरा' के बोल की उत्पत्ति होगी। सामान्यतया इस डेढ़ मात्रिक बोल को दो बार प्रयुक्त किया जाता है। दो बार बजाने से इस का मात्रा काल तीन मात्रा का हो जाता है जैसे 'दाऽर दाऽर' अर्थात मिजराब के चार बोलों को तीन मात्रा काल में रखा जाता है। इस प्रकार के बोल प्रायः रजाखानी गत अर्थात द्रुत गत की बंदिशों में, तोड़ों में प्रयुक्त किया जाता है।

'द्रा'

जब 'दा' और 'रा' के बोलों को चैथाई मात्रा में बजाएँ तो मिजराब के इस प्रकार आघात करने से 'द्रा' बोल की उत्पति होती है। इस बोल को सफाई या सुन्दरता से निकालने के लिए काफी अभ्यास की आवश्यकता होती है। कुछ लोग 'द्रा' बजाने के लिए तर्जनी व मध्यमा दोनों में मिजराब पहन कर बाज के तार पर इस प्रकार प्रहार करते हैं कि पहले मध्यमा उंगली की मिजराब बाज पर पड़े और तुरन्त ही तर्जनी की भी मिजराब बाज पर पड़े तब 'द्रा' बोल का बोध होता है।

उपरोक्त मिजराब के बोलों से ही अन्य कई प्रकार के बोलों तथा छन्दों की रचना की जाती है। जैसे द्रे, द्रा ऽर, डेरा ऽर, ददाऽर इत्यादि मिश्रित बोल बन सकते हैं जो कि विभिन्न प्रकार की लयकारियों में दर्शाए जा सकते हैं।

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 सितार बजाने के लिए अंगुली पर जिस चीज को धारण किया जाता है उसे क्या कहते हैं?

क) जवा

ख) सितार

ग) तोड़ा

घ) मिजराब

10.2 सितार वादन में मिजराब को किस अंगुली पर पहनते हैं?

क) दाएं हाथ की तर्जनी

ख) बाएं हाथ की तर्जनी

ग) दाएं हाथ की मध्यमा

घ) दाएं हाथ की कनिष्का

10.3 तार पर बाहर से अन्दर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे क्या कहते है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

10.4 तार पर अंदर से बाहर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे क्या कहते है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

10.5 दा तथा रा दोनों बोलों को जब एक मात्रा में बजाते हैं तो कौन सा बोल बनता है?

क) रा

ख) दा

ग) दिर

घ) द्रा

10.4 सारांश

सितार वाद्य को अंगुली में मिजराब पहनकर बजाया जाता है। मिजराब की सहायता से विभिन्न बोलों का निर्माण होता है - दा, रा, दिर, द्रा ऽर, दाऽर आदि। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वाद्य को सीखने के लिए मिजराब के बोलों को का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इससे हाथ की तैयारी के साथ-साथ लय बढती जाती है। इन्हीं की सहायता से अलग-अलग छंदों का वादन होता है तथा रागों के प्रस्तुतीकरण के समय, विभिन्न प्रकार के तोड़ों का वादन किया जाता है।

10.5 शब्दावली

- मिजराब: लोहे की त्रिकोणाकार वस्तु, जिसे दायें हाथ की तर्जनी में धारण कर, सितार के तार पर आघात करने से ध्वनि उत्पन्न होती है।
- दा का बोल: तार पर बाहर से अन्दर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'दा'कहते हैं।
- रा का बोल: तार पर अन्दर से बाहर की ओर प्रहार करने पर जो बोल बनता है, उसे 'रा'कहते हैं।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: घ)

10.2 उत्तर: क)

10.3 उत्तर: ख)

10.4 उत्तर: क)

10.5 उत्तर: ग)

10.7 संदर्भ

डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. सितार में मिजराब के बोलों के विषय में लिखिए।

प्रश्न 2. सितार वाद्य में मिजराब को पहनने की विधि को लिखिए।

इकाई-11
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
11.4	दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.5	सारांश
11.6	शब्दावली
11.7	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.8	संदर्भ
11.9	अनुशंसित पठन
11.10	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA102PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल, दादरा आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल तथा दादरा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- तीन ताल तथा दादरा ताल का परिचय प्रदान करना।
- तीन ताल तथा दादरा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तीन ताल तथा दादरा ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा दादरा ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा दादरा ताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा दादरा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल तथा दादरा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

10.3 तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	16
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

तीन ताल 16 मात्रा की ताल है। यह ताल 4 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 4 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पांचवी व तेहरवीं मात्रा पर ताली तथा नौवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। फिल्मी संगीत में इस ताल का काफी प्रयोग होता है।

तालिपि

एकगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा

दुगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधीं	धींधा	धा धीं	धींधा	धातीं	तीं ता	ताधीं	धींधा

तिगुण

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं धीं	धा धा धीं	धींधाधा	तींतीं ता	ताधींधीं	धा धाधीं	धींधा धा	धीं धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातीं तीं	तिताधीं	धींधा धा	धीं धींधा	धा धींधीं	धाधातीं	तींताता	धींधींधा

x				**2**			
1	2	3	4	5	6	7	8
धाधीं धीं	धा धा धीं	धींधाधा	तींतीं ता	ताधींधीं	धा धाधीं	धींधा धा	धीं धींधा
0				**3**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धातीं तीं	तिताधीं	धींधा धा	धीं धींधा	धा धींधीं	धाधातीं	तींताता	धींधींधा

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
0				**3**			

1	2	3	4	5	6	7	8
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
x				**2**			
9	10	11	12	13	14	15	16
धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा	धाधींधींधा	धाधींधींधा	धातींतींता	ताधींधींधा
0				**3**			

11.4 दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	06
विभाग	02
ताली	01
खाली	01

एक ताल 06 मात्रा की ताल है। यह ताल 2 विभागों में विभक्त है। दोनों विभाग 3 मात्राओं के हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर ताली व चौथी मात्रा पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल मध्य लय, द्रुत लय में बजाई जाती है। इस ताल को भारतीय सुगम संगीत में गीत, गज़ल, भजन आदि के साथ बजाया जाता है। यह तबले पर बजाए जाने वाला एक ताल है।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	ती	ना
x			**0**		

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	ती	ना
x			**0**		

दुगुण

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
x			**0**		

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
x			**0**		

1	2	3	4	5	6
धाधी	नाधा	तीना	धाधी	नाधा	तीना
x			**0**		

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना
x			**0**		

1	2	3	4	5	6
धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना
x			**0**		

1	2	3	4	5	6
धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना	धाधीना	धातीना
x			**0**		

चौगुण

1 धाधीनाधा **x**	2 तीनाधाधी	3 नाधातीना	4 धाधीनाधा **0**	5 तीनाधाधी	6 नाधातीना
1 धाधीनाधा **x**	2 तीनाधाधी	3 नाधातीना	4 धाधीनाधा **0**	5 तीनाधाधी	6 नाधातीना
1 धाधीनाधा **x**	2 तीनाधाधी	3 नाधातीना	4 धाधीनाधा **0**	5 तीनाधाधी	6 नाधातीना

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

11.2. तीन ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

11.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

11.4. तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

11.5. दादरा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

11.6. दादरा ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

11.7 दादरा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 5

ग) 6

घ) 3

11.8. दादरा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

11.9. तीन ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) तिं

घ) ता

11.10 दादरा ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) ती

घ) ता

10.5 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल तथा दादरा तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। तीन ताल 16 मात्रा तथा दादरा 06 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

10.6 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।

- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

10.7 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: घ)

11.2 उत्तर: ग)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: क)

11.5 उत्तर: ग)

11.6 उत्तर: क)

11.7 उत्तर: क)

11.8 उत्तर: क)

11.9 उत्तर: ग)

11.10 उत्तर: ग)

11.8 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.9 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.10 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. तीनताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

प्रश्न 4. दादरा ताल को हाथ पर बोलकर बताइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग अल्हैया बिलावल का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 2. राग काफी का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरव का परिचय तथा सरगम गीत लिखिए।

प्रश्न 4. राग अल्हैया बिलावल, काफी, भैरव के पांच-पांच अलंकार लिखिए।

प्रश्न 5. राग अल्हैया बिलावल का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 6. राग अल्हैया बिलावल का आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. राग काफीका आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 8. राग भैरव का आलाप, छोटा ख्याल/द्रुत गत पांच तानों/तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 9. सितार में मिजराब के बोलों के विषय में लिखिए।

प्रश्न 10. तीनताल तथा दादरा ताल का पूर्ण परिचय लिखिए।